Volume III Issue 1 March, 2013 ISSN 2249-8907

Vaichariki

A Multidisciplinary International Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Manoj Kumar

ISSN 2249 – 8907

VAICHARIKI

A Multidisciplinary Refereed International Research Journal

Veer Bahadur Seva Samiti

Volume III | Issue 1 | March 2013

Chief Editor : Dr. Manoj Kumar
Department of Sanskrit
B.R.A. Bihar University
Muzaffarpur

E-mail : vaichariki@gmail.com

www.vaicharikibihar.blogspot.com

Patron

Dr. S. B. Poddar

(Chief Editor Shodh Prerak, Executive Editor Jigyasa, & Editor Śodha Pravāha)

E-mail : shodhprerak@gmail.com, jigyasabhu@gmail.com, sodhapravaha@gmail.com

ADVISORY BOARD

Prof. Kalpana Gupta
Head
Department of Home Science
M. M.V. BHU, Varanasi

Dr. Yugal Kishore Mishra
Former Dean
Faculty of Social Science
Department of Ancient Indian and Asian Studies
Magadh University Bodh-Gaya

Dr. Pravesh Bhardwaj
Associate Professor & Head
Department of History,
D.A.V. P.G. College, (B.H.U.) Varanasi

Dr. Bidyapati Kumar
Professor
University Department of Mathematics
B.R.A.B.U., Muzaffarpur

Dr. Anand Prakash Singh
Professor
Department of Sociology, B.H.U. Varanasi

Dr. Deepa Chand
Head, Department of Home Science
K. N. G. P. G. College, Sant Ravi Das Nagar,
Gyanpur, Bhadohi

Dr. Shridhar Mishra
Professor
Department of Sanskrit & Prakrit
D.D.U.Gorakhpur University
Gorakhpur

Dr. Ajaya Goswamy
Head
Department of Home Science
Govt. Girls P.G. College, Ghazipur

Dr. Suman Mishra
Dean and Head
Faculty of Home Science
Sri A. K. P.G. College, Varanasi

Dr. B.N.Mishra
Associate Professor
Department of Sociology, LNMU, Darbhanga (Bihar)

EDITORIAL BOARD

Dr. Archana Singh
Associate Professor
Physical Education
Mahila Maha Vidyalaya,BHU

Dr. Reeta Yadav
Deptt. of Home Science
VPG College, Faizabad

Dr. Sarvesh Kumar
Documentation- Cum-Asst. Librarian
Centre for Women's Studies
University of Allahabad (U.P.)

Dr. Arvind Prasad
Department of Psychology
B.P.S. College, Desari
B.R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur

Dr. Md. Meraj Ahmad
Sr. Assistant Professor
Department of Sanskrit, University of Kashmir,
Hazratbal, Srinagar Kashmir

Dr. Jai Singh
Assistant Professor
Department of Philosophy
M. M.V. BHU, Varanasi

Dr Kavita Arya
HOD Dept of English
Arya Mahila PG College,BHU

Dr. K.S. Pathak
Department of Psychology
Dr. Ram Manohar Lohiya, P.G. College
Bhairav Talab, Varanasi

Dr. Ravi Kumar Srivastava
Associate Professor
University Dept. of Commerce
B.R.A.B.U, Muzaffarpur

Abhishek Mishra
Lecturer in Management
Institute of Management Studies
MGKVP, Varanasi

A Refereed Quarterly Research Journal

© Publisher

Printed by : Kabara Offsets, Ravindrapuri, Varanasi.

Published By : VEER BAHADUR SEVA SANSTHA

Contact – 09415390515

Branch Office - Tara Nagar Colony,
Chhittupur, (BHU), Varanasi – 221005.

Note : Scholars will be answerable to the contents of their articles.

- अभिक्रमित अनुदेशन का अर्थ एवं स्वरूप 212-213
  कृष्ण कुमार सिंह, शोध छात्र, एम.एड. एजुकेशन, के.एन.आई.पी.एस.एस., सुल्तानपुर
- दलित राजनीतिक समस्या और मीडिया का सामाजिक परिप्रेक्ष्य 214-218
  उमेश कुमार पाठक, शोधार्थी, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)
  विवेक विश्वास, शोधार्थी, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)
- प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त विशिष्ट बी.टी.सी. अध्यापकों तथा शिक्षामित्रों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन 219-223
  विजय कुमार यादव, शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उ.प्र.।
- इस्लाम और गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यक, जजिया के संदर्भ में 224-227
  डॉ. बन्दे हुसैन अन्सारी, शिक्षक, छपरा-841301, बिहार
- भारत में इस्लाम का आरम्भिक रूप 228-231
  अवधेश कुमार, शोध छात्र, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।
- समकालीन कविता और उसका कथ्य 232-233
  अरुण प्रताप राव, शोध छात्र हिन्दी विभाग, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर
- 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन' और 'कर्मवीर' 234-236
  अरुण गर्ग, शोध छात्र, पत्रकारिता विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
- प्राचीन भारत में शिक्षा के विषय 237-238
  संतोष कुमार, नेट, प्रवक्ता प्रोजेक्ट गर्ल्स इंटर कॉलेज भदाँय, सिवान
- नेपाली की भक्तिभावना 239-243
  दिवाकर चौधरी, यु.जी.सी.-नेट.जे.आर.एफ., शोध-छात्र, हिन्दी, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार
- ऋग्वेद में अश्विनदेवों का समीक्षात्मक अध्ययन 244-246
  श्वेता मिश्रा, शोध छात्रा-सस्कृत, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- ॐ की व्यापकता एवं महत्व 247-250
  डॉ. आशा शर्मा, एसोसियेट प्रोफेसर, विधि विभाग, एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक
- मृत्यु दण्ड की आजीवन कारावास में परिवर्तनीयता : एक विवेचन 251-254
  अजय कुमार, शोध छात्र, विधि संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- बिहार की राजनीति के दो दशक (1990-2010) 255-258
  विवेक कुमार सिंह, शोध छात्र, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार
- भक्तिकालीन काव्य में होली का ऐतिहासिक महत्त्व 259-264
  आशा मीणा, शोधार्थी, पीएच.डी. भारतीय भाषा केन्द्र, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- अपराजेय जनकवि नागार्जुन 265-267
  डॉ. कविता कुमारी सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आर.एन.कॉलेज, हाजीपुर

नेपाली की भक्तिभावना

दिवाकर चौधरी *

गोपाल सिंह 'नेपाली' छायावादोत्तरकालीन प्रेम, प्रकृति, राष्ट्रीयता और मस्ती की गीतिकाव्यधारा के प्रतिनिधि हस्ताक्षर माने जाते हैं। जिन्होंने आलोचकीय साहित्यिकता से पृथ जनगीत-धारा को अपनाया। उनका सम्पूर्ण काव्य मस्ती और उल्लास का काव्य है। लेकिन समकालीन मस्ती काव्य प्रणेताओं-बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, भगवतीचरण वर्मा, 'अंचल' आदि से सर्वथा भिन्न सरल, स्निग्ध और मौलिक।

नेपालीजी ने अपने काव्य में समकालीन समस्याओं को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। वे लोक-संवेदन के अप्रतिम मानववादी कवि थे। उनके काव्य में लोकजीवन का गहरा साक्षात्कार मिलता है। इस समस्त काव्य-प्रवृतियों के अलावा 'नोपालीजी' एक परम आस्थावान भक्त भी थे। अवश्य ही प्रेम, प्रकृति और राष्ट्रीयता की त्रिवेणी उनके काव्य-सृजन को सर्वाधिक सींचती रही। किन्तु इसके साथ ही कवि का भक्त-हृदय भी यत्र-तत्र अपनी भावनाओं की समरसता से उनके काव्य-सृजन को अभिसिंचित करता रहा है।

हिन्दी-साहित्य में भक्ति की विस्तृत परंपरा मिलती है। जिसका उत्स आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार धर्म की भावात्मक अनुभूति या भक्ति जिसका सूत्रपात महाभारतकाल में और विस्तृत प्रवर्तन पुराणकाल में हुआ था।[1]

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार- भक्ति का सर्वप्रथम उल्लेख 'श्वेताश्वेतर उपनिषद (6/33)' में मिलता है।[2] आगे चलकर- महाभारत, गीता, पुराणों, नारद-भक्ति-सूत्र, रामचरितमानस- आदि विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में 'भक्ति' का सांगोपांग वर्णन-विश्लेषण किया गया। जिसमें भक्ति के नौ, शरणाति के छः आसक्ति (भगवद्विषयक) के ग्यारह और विनय की भूमिका के सात प्रकारों का प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण विश्लेषण किया गया।

नेपालीजी की भक्ति-भावना का निदर्शन दो स्रोतों से होता है- 1. कविताओं से 2. फिल्मी गीतों से।

'वन्दनागीत' शीर्षक कविता में कवि का भक्त हृदय 'ईश्वर' के देय से अभिभूत जान पड़ता है। वह ईश्वर को संसार के प्रत्येक उपादान का स्रष्टा मानता है, उसकी मान्यता है कि ईश्वर प्रकृति के कण-कण में अंतर्निहित है। संपूर्ण सृष्टि उसी की छाया-प्रतिच्छाया है। यहां तक की स्वयं का कविकर्म भी ईश्वर की ही कृपा है, कवि के शब्दों में-

> जीवन की कृष छाया पर यह सुषमा का आवरा तुम्हारा
> नील नग्न इस गगन अंग पर तारों का आभरण तुम्हारा
> प्राची देश में उठा बालरवि, नभ में उड़े किरण में पंछी
> निर्मल जल पर खिले कमल-दल, कमल-कमल पर चरण तुम्हारा ।।[3]
> रूप गंध रस लेकर तुमसे कवि ने दुनिया नई बना ली
> शब्द-शब्द की स्वर-लहरी में कवि की कृति उपकरण तुम्हारा।।[4]

'परिचय' शीर्षक कविता में कवि स्वयं को विधाता की सर्जना मानता है और स्वयं को 'पूजा का एक सुमन' कहता है, जिसकी सार्थकता ईश्वर के चरणों पर न्योछावर हो जाने में हैं। कवि अपने मन की भर्त्सना करते हुए ईश्वर के महात्म्य का साक्ष्य देते हैं, जो शरणाति का एक महत्वपूर्ण लक्षण होता है। कवि के शब्दों में-

> तुम कब समझोगे मेरे मन
> मैं तो पूजा एक सुमन
>   जिसकी नदियाँ गिरी से बह-बह
>   इस जीवन के सुख-दुःख सह-सह
>   क्षण भर को यहाँ-वहाँ रह-रह
>   छू लेती सागर की तह-तह
> मैं उसी विधाता का सर्जन
> तुम कब समझोगे मेरे मन।।"[5]

कवि जब अपने आँगन में उगी हरी घास को देखते हैं तो उसमें ईश्वर की असीम करूणा दृष्टिगोचर होती है। यह कवि की भक्ति और ईश्वर के प्रति अनन्य आस्थः, श्रद्धा और कृतज्ञता को सूचित करता है।

---

* यु.जी.सी.-नेट.जे.आर.एफ., शोध-छात्र, हिन्दी, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

प्रभु की असीम करूणा कुछ-कुछ होती हैं अब रे मुझे भास
सुख, सुषमा, शोभा, सुन्दरता बिखरी है मेरे आस-पास
फिर मुक्त कंठ से इन सब का गुण-गान मधुर मैं करूँ क्यों न
दी बिछा उसीने इसीलिए मेरे आँगन में हरी घास।।[6]

नेपालीजी गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास आदि की तरह भक्तकवि नहीं हैं। परन्तु इनके काव्य में भी अन्य भक्तकवियों की ही तरह भक्ति के विभिन्न तत्व उपलब्ध हैं। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता, आत्मनिवेदन, गुणमहात्म्य-वर्णन, ईश्वर की असीम क्षमता के साथ ही स्वयं की असमर्थता की अभिव्यक्ति भी कवि ने की है-

जानता कहाँ, कैसे, कब मैं, है जीवन इतना मधुर-मधुर
जो उगा न देता वह प्रभु रे मेरे आँगन में हरी घास।।[7]

'कोई' शीर्षक कविता में कवि ने ईश्वर के प्रति अपनी 'रहस्यभावना' का परिचय दिया है। यद्यपि कवि की रहस्यवादिता-कबीरदास, महादेवी आदि की रहस्यभावना के मेल में नहीं है, अपितु कुछ हद तक 'पन्त' की रहस्यभावना के समीप जान पड़ता है। किन्तु पन्त की रहस्यभावना नेपालीजी से परिष्कृत और वैचारिक दृष्टि से समुन्नत है। प्रस्तुत कविता में कवि संकेत में 'महादेव' (शिव) के लोकप्रसिद्ध और परंपरागत स्वरूप का वर्णन करते हुए प्रकारांतर से सृष्टि के संपूर्ण नाश और निर्माण को उसका खेल बताते हैं तथा विश्व पर मंचीयता आरोपित कर संसार की समस्त क्रियाओं को 'शिव' का नर्तन मानते हैं-

एक अनूठा खेल दिखाकर नटवर खेल रहा है कोई
मस्तक पर है चन्द्र सुशोभित
गंगा उलझी जटा-जूट में
स्वाद सुधा का मिलता उसको
काले-नीले कल-कूट में
गोर तन पर भस्म रमाए
डाल गले मुंडों की माला
युग-युग से इस विश्व मंच पर
नाच रहा है डमरूवाला
... ...नाश और निर्माण सजाकर ज्ञानी खेल रहा है कोई।।[8]

कबीरदास ने शरीर की उपमा चादर से देते हुए ईश्वर को उसका बुनकर या निर्माता कहा था और कपड़े की बुनाई या रचना प्रक्रिया को शरीर की रचना-प्रक्रिया और व्यवस्थाओं से जोड़ा था, कविता थी- 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया।' नेपालीजी की कविता- 'झीनी-झीनी चदरिया' में कबीरदास की उक्त कविता की झलक दिखाई देती है, लेकिन नवीनता के आवरा से परिवेष्टित और नविन स्वर में उदबुद्ध। कवि शरीर को एक चादर और ईश्वर को उसका स्रष्टा मानते हुए जीवन भर अपनी सुध न लेने के प्रति शिकायत व्यक्त करता है। यहां कवि ईश्वर के प्रति घनिष्ठ प्रेम जो कुछ-कुछ 'संख्य-भाव' की भक्तिभावना के समीप जान पड़ता है, अभिव्यक्ति है। उलाहना और मान के स्वर में कवि कहता है-

देकर चादर झीनी-झीनी
फिर जीवन भर खबर न लीन्हीं
मन की खुश्बू भीनी-भीनी
न जाने किस-किस ने छीनी
लेनी थी रंगरेज न सुध तो
नाहक रंगी चुनरिया रे।।[9]

नेपाली की भक्तिपरक कविताएँ संख्या में कम हैं। लेकिन इन रचनाओं में उपलब्ध भक्ति-तत्व उनके ईश्वरीय प्रेम व भक्ति की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति करती हैं।

नेपाली विरचित फिल्मी गीतों (भक्तिपरक) की संख्या, भक्तिपरक कविताओं की तुलना में ज्यादा है और उनकी भक्तिभावना की व्यापकता को परिष्कृत रूप में प्रकट करती है। 1944 ई. में नेपालीजी 'कालिदास शताब्दी समारोह' में भाग लेने बंबई पहुंचे। जिसमें 40 प्रतिनिधि कवियों ने भाग लिया था। समारोह में इनका काव्य पाठ बेजोड रहा था। जिसे सुनकर 'फिल्मीस्तान' (फिल्मी-कंपनी) के निर्माता 'शशिधर मुखर्जी' और निर्देशक 'पी.एल. संतोषी' ने काफी दबाव देकर अपनी कंपनी के गीतकार के रूप में (लगभग 1500-2000 रू. मासिक वेतन पर) अनुबंधित कर लिया। 1948 ई. तक इन्होंने कंपनी के

लिए कार्य किया। 1945 ई. में उन्हें 'बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन' की ओर से सर्वश्रेष्ठ गीतकार का अवार्ड मिला। 1948 ई. में इन्होंने 'हिमालय फिल्मस' नामक संस्था का निर्माण किया और 'नेपाली पिक्चर्स' (नेपालीजी की फिल्म कंपनी) के बैनर तले 'नजराना' (1949), 'सनसनी' (1951) और 'खुश्बू' (1956) फिल्में बनाई। इन्होंने लगभग 50 फिल्मों में 300 से अधिक गीत लिखे। इनमें कई भक्ति फिल्में थीं। कुछ प्रमुख भक्ति-फिल्में जिनमें नेपाली जी ने गीत लिखे - हर हर महादेव (1950), नागपंचमी (1953), तुलसीदास (1954), दुर्गा-पूजा (1954), शिवभक्त (1955), सती मदालसा (1955), गौरीपूजा (1956), नवरात्री (1955), नरसी भगत (1957), पवनपुत्र हनुमान (1957), जय भवानी (1956, अंतिम)।

नेपालीजी मूलतः गीतकार थे। अतः उनके गीतों में भावनाओं की सरसता और गहराई ज्यादा है। भावव्यंजना की मौलिकता के साथ ही उनके गीतों में नवीनता के दर्शन होते है। उनके भक्ति गीतों में भक्ति की सरलता एवं भावों की स्निग्धता वर्तमान है। 'भोलेनाथ' का गुणगान करते हुए कवि स्वमुक्ति की करूण प्रार्थना करते हुए कहता है-

भोलेनाथ से निराला, गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं, कोई और नहीं
तुमने जग का कष्ट मिटाया
मुझको स्वामी क्यों बिसराया
अब तो मुझको बचाने वाला, कोई और नहीं
ऐसी बिगड़ी बनाने वाला, कोई और नहीं।।[10]

प्रस्तुत गीत में भोलेनाथ की वंदना के साथ ही कवि का 'आत्मनिवेदन' अभिव्यक्त है, 'विनय की दैन्य नामक भूमिका' का उल्लेख है, जिसमें भक्त अपनी दीनता और ईश्वर की सर्वशक्तिमता का वर्णन कर अपनी मुक्ति की प्रार्थना करता है। 'आसक्तियों' में 'भक्तवत्सलता, गुणमहात्म्यासक्ति' और 'शरणागति' के 'रक्षा का विश्वास, कारूण्य और आत्मनिक्षेप' आदि भक्ति-तत्वों के दर्शन होते हैं।

कवि विश्वकल्याण का आकांक्षी और मानवतावाद का समर्थक रहा है। अतः असत रूपी अन्धकार को दूर करने और मानव कल्याण के लिए 'शक्ति' की उपासना करता है-

मैया तेरी आरती से अंधेरा टले
भक्त के अँधेरे घर में रोशनी जले
जय-जय भवानी
जय-जय भवानी।।[11]

प्रस्तुत गीत में कवि का शक्ति के प्रति 'रक्षा का विश्वास' अभिव्यक्त है।

नेपालीजी ने 'राम-कृष्ण' की भक्ति से सम्बन्धित गीत भी लिखे हैं। 'राम' से 'शरणागति' की याचना करते हुए कवि कहता है-

हे राम! मुझे अपनी शरण में ले लो राम
लोचन मन में यदि जगह न हो तो युगल चरण में ले लो राम
जीवन दे के जाल बिछाया, रच के माया नाच नचाया
चिंता मेरी तभी मिटेगी, जब चिंतन में ले लो राम
तुमने लाखों पापी तारे, मेरी बरी बजी हारे
मेरे पास न पुण्य की पूंजी, पद-सृजन में ले लो राम
घर-धर अटकूँ, दर-दर भटकूँ, कहाँ-कहाँ सर पटकूँ
इस जीवन में मिलो न तुम तो, मुझे मरण में ले लो राम
हे राम! मुझे अपनी शरण में ले लो राम।।[12]

इस गीत में कवि दैन्य भाव प्रवल हो उठा है और बरबस ही तुलसीदास की 'विनयपत्रिका' की
'तुलसीदास' फिर के इस गीत में कवि दैन्य भाव प्रवल हो उठा है और बरबस ही तुलसीदास की 'विनयपत्रिका' की
'तुलसीदास' फिर के सदृश 'राम' के प्रति निवेदित जान पड़ता है।
याद दिलाता है। यहां कवि की भक्तिभावना बहुत कुछ तुलसीदस की भक्ति के सदृश 'राम' के प्रति निवेदित जान पड़ता है।
साथ ही कवि की राम के प्रति अनन्य भक्ति और अनुराग की सरस व संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

'राम' की ही भांति कवि का 'कृष्ण' के प्रति अभिव्यक्ति श्लाध्य है। कृष्ण को समर्पित प्रस्तुत गीत में भगवद्-दर्शन की उत्कंठा और भाव-विह्लता का चरम उत्कर्ष अभिव्यंजित हुआ है-

दर्शन दो घनश्याम, नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे
मन-मंदिर की ज्योति जला दो घट-घट वासी रे

द्वार दया का जब तू खोले, पंचम सुर में गूंगा बोले
अँधा देखे, लंगड़ा चलकर पहुंचे काशी रे
मंदिर-मंदिर मूरत तेरी, फिर भी न दिखे सूरत तेरी
युग बीते न आई मिलन की, पूरनमासी रे
दर्शन दो घनश्याम, नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे।।[13]

'नरसी भगत' फिल्म के इस बहुचर्चित गीत में नेपालीजी की भक्तिभावना की सबसे सरल और मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना हुई हैं 'कृष्ण' के प्रति अनन्य आस्था, विरहातुरता और भक्ति का उदात रूप अभिव्यंजित हुआ है। प्रस्तुत गीत में 'आत्मनिवेदन', शरणागति के कारूण्य, विनय की दैन्य भूमिका और 'आसक्तियों में परमविरहासक्ति', शरणागतवत्सलता, गुणमहात्यासक्ति, दास्यासक्ति और आत्मनिवेदन आदि भक्तिभावना तत्व समाविष्ट है।

नेपालीजी चूंकि मानवतावादी कवि थे। मानव-कल्याण के आकांक्षी गीतकार थे, युग और समाज की ज्वलंत समस्याओं को स्वर देनेवाले अनिवार्य रूप से समय-संदर्भित आधुनिकतावादी कवि थे। अतः उनके भक्तिगीतों में ईश्वर की दिव्यता के प्रति आस्था ही नहीं अलौकिकता और करूणा के प्रति प्रणम्यता का भाव ही नहीं, अपितु सामान्य जनों में कष्टों के प्रति ईश्वर की अनदेखी और अन्याय, उपेक्षा और निर्ममता के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया भी अभिव्यक्त है-

दुनिया में जनम लेते ही कोई जनम से मौत तक कोई अमीर है
कोई जनम से मौत तक वना फकीर है
हम इस जनम में भोगते हैं, उस जनम का फेर
भगवान तेरे राज में अंधेर-है-अंधेर।।[14]
जिसे बनाना उसे मिटाना काम तेरा
मिटनेवाला फिर क्यों लेंगे नाम तेरा
धरती का घर भरा फूल से, तारो से आसमान का
सागर भर गये, भर न सका तू पेट इस इन्सान का
इंसानों के घर से है दूर मुकाम तेरा
मिटनेवाले फिर क्यों लेंगे नाम तेरा
मिटनेवाले फिर क्यों लेंगे नाम तेरा।।[15]

नेपालीजी की रचनाओं में समग्रता से विचार करने पर हम पाते हैं कि वे अवश्य ही निर्विवाद रूप से 'प्रेम, प्रकृति और राष्ट्रीयता' के अन्यतम उद्गाथा थे। समकालीन समस्याओं की अतिशयता और मानवकल्याण की आकांक्षा से उत्पन्न विकलता तथा परिस्थितिजन्य विवशता उनकी भक्ति भावना को भले ही पूर्ण विकसित होने का अवसर न देती हो। परन्तु अवश्य ही कवि की भक्त-हृदय भक्ति की अन्तःसलिता से स्वयं को अभिसिक्त करता शक्ति पाता, संसार-समर में अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार प्रवृत होता रहा है।

निर्विवाद ही नेपालीजी-कबीर, तुलसीदास, सूर आदि की कोटि के भक्त कवि नहीं थे। किन्तु उनकी रचनाओं में भक्ति का परिष्कृत रूप अभिव्यक्ति हुआ है। ईश्वर के प्रति अटूट आस्था और भक्ति निवेदित है। कतिपय रचनाओं से उनका झुकाव भले ही 'महादेव और कृष्ण' की ओर विशेष जान पड़ता हैं। किन्तु किसी के प्रति पक्षपातपूर्ण आग्रह का लेशमात्र भी अभिव्यक्ति नहीं हुआ है। वस्तुतः वे ईश्वर के किसी विशेष स्वरूप से स्वयं को बांधते नहीं बल्कि ईश्वर को उसकी संपूर्णता में, उसकी व्यापकता में स्वीकार कर उनके विभिन्न स्वरूपों के प्रति अपनी भक्ति निवेदित करते हैं। वे जितनी आस्था और भक्ति से 'कृष्ण' को याद करते हैं, उतनी ही श्रद्धा और भक्ति से 'राम' को भी। जिस आस्था और समर्पण से 'शक्ति' की उपासना करते हैं, उसी आस्था और विश्वास से 'शिव' की भी। व्यापक 'ब्रम्ह' की तरह उनकी 'भक्ति' भी व्यापक हैं।

सन्दर्भ :

1. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी ग्रंथमाला : 43, 22वाँ संस्करण, 1988, प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, पृ. 43
2. डॉ. नगेन्द्र, संपादक, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मैयूर पेपरबैक्स, नौएडा, 27वाँ पुर्नमुद्रित संस्करण, 2000, पृ. 88.
3. नंदन नंदकिशोर, संपादक, पंचमी कविता : वन्दनागीत, प्रकाशक : साहित्य संसद नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2011 पृ. 30.
4. उपरिवत्

5. नंदन नंदकिशोर, संपादक, उमंग कविता : परिचय प्रकाशक : राजदीप प्रकाशक, नई दिल्ली, संस्करण-2011 पृ. 25.
6. नंदन नंदकिशोर, संपादक, उमंग कविता : हरी घास प्रकाशक : राजदीप प्रकाशक, नई दिल्ली, संस्करण-2011 पृ. 51.
7. उपरिवत्
8. नंदन नंदकिशोर, संपादक, नीलिमा कविता : कोई प्रकाशक : पुस्तक भवन, नई दिल्ली, संस्करण-2011 पृ. 79.
9. नेपाली सविता सिंह, संपादक गोपाल सिंह नेपाली, समग्र भाग-1 कविता : झीनी-झीनी चदरिया प्रकाशक : गोपाल सिंह नेपाली फांउडेशन, बेतिया प्रथम संस्करण 2010 पृ. 579.
10. फिल्म हर-हर महादेव 1950.
11. फिल्म जय भवानी 1956.
12. फिल्म : तुलसीदास 1954.
13. फिल्मः नरसीभगत 1957.
14. फिल्मः नवरात्री 1955.
15. शिव : भगत, 1955.

***